15

पूर्व-प्राथमिक विद्यालय I (आयु 3–4 वर्ष)

टिप्पणी

1. मुख्य अवधारणाओं, प्रस्तावित शैक्षणिक प्रक्रियाओं और सीखने के आरंभिक प्रतिफलों को एक-से-एक मिलाना अपेक्षित नहीं है। इन्हें समग्र रूप में देखा जाना चाहिए।
2. इन सीखने के प्रतिफलों का विकास इस मान्यता के साथ किया गया है कि पूर्व-प्राथमिक विद्यालय में प्रथम भाषा/निर्देश की भाषा घर में बोली जाने वाली भाषा या क्षेत्रीय भाषा ही होगी। अंग्रेजी भाषा का उपयोग द्वितीय भाषा के रूप में किया जाना चाहिए।

लक्ष्य 1— बच्चों का अच्छा स्वास्थ्य और खुशहाली बनाए रखना		
मुख्य अवधारणाएँ/कौशल	**शैक्षणिक प्रक्रियाएँ (शिक्षक क्या कर सकते हैं?)**	**सीखने के आरंभिक प्रतिफल**
• स्वयं के प्रति जागरूकता • स्वयं के प्रति सकारात्मक अवधारणा का विकास • आत्मनियमन • निर्णय लेना और समस्या-समाधान • सामाजिक रूप से वाँछनीय व्यवहार (प्रो-सोशल), जैसे— एक-दूसरे का ख्याल रखना, साझेदारी, सहयोग, दया और दूसरों की भावनाओं व अधिकारों का सम्मान करना • अच्छी आदतों का विकास, साफ-सफाई और स्वयं की सुरक्षा के प्रति जागरूकता	निम्नलिखित अवसर और अनुभव प्रदान किए जाएँ— • अपने, अपने शरीर के अंगों और अपने परिवार के सदस्यों के बारे में जानना • विभिन्न खेलों तथा गतिविधियों के द्वारा नामों को जानना और संबंधों के प्रति समझ बनाना, जैसे नाम पर ताली बजाना एवं मित्रता करना, भ्रमण (मित्रों के साथ घूमना) आदि। • बच्चों के जन्मदिवसों, त्यौहारों के आयोजन द्वारा बच्चों को छोटे-छोटे उत्तरदायित्व देकर उनके योगदान/कार्य की सराहना करके एवं उनके कार्य के प्रदर्शन द्वारा उनमें स्वयं के मूल्य और अपनी उपलब्धियों पर गर्व की अनुभूति करने के अवसर प्रदान करना।	• अपनी कुछ शारीरिक विशेषताओं का उल्लेख करना शुरू कर देते हैं। • परिवार के नजदीकी सदस्यों को पहचानते हैं। • गतिविधियों में भागीदारी करते हैं और पहल करते हैं। • गतिविधियों और खेल के दौरान अपनी बारी की प्रतीक्षा करते हैं और सरल नियमों का पालन करते हैं। • शाब्दिक और अशाब्दिक रूप (हाव-भाव, चित्रकारी आदि) से अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हैं। • अपनी पसंद बताते हैं और प्राथमिकता को अभिव्यक्त करते हैं।

*पाठकों की सुविधा हेतु अधिनियम का सरलीकरण एवं उसका संक्षिप्त विवरण दिया गया है।

• स्थूल गत्यात्मक कौशल का विकास (चलना, दौड़ना, कूदना, घुटनों के बल चलना, उछलना, चढ़ना, कदमताल, फेंकना, लपकना, किक मारना)। • सूक्ष्म गत्यात्मक कौशल का विकास और आँखों-हाथों का समन्वयन (धागा पिरोना, कागज के छोटे-छोटे टुकड़े फाड़ना, चिपकाना, आड़ी-तिरछी रेखाएं (स्क्रिबल) खींचना, चित्रकारी, रंग भरना, छपाई करना (ठप्पे लगाना), मिट्टी के खिलौने या अन्य चीजें बनाना, कागज मोड़कर वस्तुएँ बनाना।	• मुक्त वार्तालाप और स्वच्छंद रूप से खेले जाने वाले खेल, जहाँ बच्चे अपने आपको अभिव्यक्त कर सकें, जैसे— खेल के मैदान में खेलना (चढ़ना, झूला झूलना, दौड़ना, चित्रकारी करना, रंग भरना आदि)। • बच्चों को रुचिकर गतिविधियों में संलग्न करना और उनसे इस तरह से बात करना कि वे सहज महसूस करें और सभी के साथ व कक्षा में सामंजस्य बैठा सकें। • ऐसे खेल और गतिविधियाँ कराना जिनमें नियम और निर्देश सरल हों, जैसे— फ्रीज़ डांस, तालियों का अनुसरण, जोर से या धीरे आवाज निकालना आदि। • बारी वाले खेल और गतिविधियाँ करना, जैसे— सुनना और चलन करना, फिंगर गेम आदि। • चित्रकारी, रंग भरना, पेंटिंग आदि। • समस्याओं का समाधान करना और छोटे-छोटे झगड़े सुलझाना (रोल-प्ले के दौरान छोटे समूह में की जाने वाली गतिविधियाँ और पहेलियाँ सुलझाना। • मुक्त खेल जिनमें बच्चों को स्वतंत्र रूप से या समूहों में खेलने के अवसर मिलें, जैसे— पहेलियाँ सुलझाना, पेग (शंकु) रखना और बाहर खेले जाने वाले खेल आदि। • बच्चों के बीच परस्पर संवाद को प्रोत्साहित करना। • दूसरे बच्चों के साथ संबंध बनाना, साथियों से सीखने और परस्पर संवाद करने हेतु अवसर प्रदान करना, जैसे— रोल-प्ले, अभिनय खेल आदि। • भावनाओं की अभिव्यक्ति और पहचान (खुशी, दुख, क्रोध) इसके लिए भावना कार्ड और कहानियों की सहायता लेना। • सीधे-सरल हाव-भाव/मुद्राओं से परिचित कराना, जैसे नमस्ते और हैलो आदि (अभिवादन करना)।	• बड़ों की सहायता से छोटे-छोटे मामले/समस्या सुलझा पाते हैं। • दूसरे बच्चों के साथ काम करते और खेलते हुए खुशी व्यक्त करते हैं। • दूसरे बच्चों की मदद करते हैं, उनका ध्यान रखते हैं और उनके साथ अपनी चीजें साझा करते हैं। • लोगों में पाई जाने वाली विभिन्नताओं के प्रति समझ बनाने लगते हैं (संस्कृति, जाति, क्षमताओं और अक्षमताओं के आधार पर और विविधता के प्रति संवेदनशीलता प्रदर्शित करते हैं। • तत्कालिक आवश्यकताएँ बताते हैं, स्वच्छता का पालन करते हैं और भोजन-संबंधी अच्छी आदतों का अनुसरण करते हैं। • अच्छे स्पर्श और बुरे स्पर्श के अंतर की समझ को दर्शाते हैं और अपरिचितों से दूरी बनाए रखते हैं। • सामान्य खतरों, खतरनाक स्थानों और वस्तुओं को पहचानते हैं तथा उनसे दूरी बनाते हैं। • खेल/प्रतिदिन की गतिविधियों, जैसे— चलना, दौड़ना, कूदना, चढ़ना, नृत्य आदि में स्थूल माँसपेशियों का विकास और समन्वयन का प्रदर्शन करते हैं। • संगीत, नृत्य और रचनात्मक गतिविधियों में भाग लेने के अवसर ढूँढते हैं और भाग लेते हैं। • विभिन्न गतिविधियों, जैसे— आड़ी तिरछी रेखाएँ खींचना, ठप्पे लगाना, धागा पिरोना, रंग भरना, मिट्टी का कार्य करना, कागज के छोटे-छोटे टुकड़े फाड़ना और चिपकाना आदि में सूक्ष्म माँसपेशियों के विकास और आँखों-हाथों के सरल समन्वयन का प्रदर्शन करते हैं।

	• बच्चों द्वारा महसूस की जा रही असुविधा और चिंताओं को साझा करना। • पूरे समूह में की जाने वाली गतिविधियों को प्रोत्साहित करना, जैसे एक साथ भोजन करना। • बच्चों की कल्पनाशक्ति को उत्प्रेरित करने के लिए छोटे समूह में की जाने वाली गतिविधियाँ, जैसे— कथा वाचन, ड्रामा, मुक्त खेल, कठपुतली खेल आदि। • स्वास्थ्य की सार्वाधिक जाँच (जैसे— कद, वजन और सामान्य स्वास्थ्य), टीकाकरण और बच्चों की सुरक्षा सुनिश्चित करना। • बड़ों द्वारा स्वयं अच्छी आदतों को अपनाकर बच्चों को संस्कार देना। स्वास्थ्य व स्वच्छता -संबंधी आदतों को अपनाना, जैसे— बड़ों की सहायता से हाथ धोना आदि। • कक्षा में बच्चों के साथ और शिक्षक-अभिभावक मीटिंग (पी.टी.एम) तथा समय-समय पर आयोजित की जाने वाली बैठकों में अभिभावकों के साथ स्वास्थ्य, पोषण और स्वच्छता-संबंधी मुद्दों पर चर्चा करना। • अच्छा स्पर्श और बुरा स्पर्श (गुड टच और बैड टच) पर चर्चा करना और उन्हें बताना कि यदि उनके सामने इस तरह की स्थिति आ जाए तो वे शिक्षक/अभिभावक और किसी भी नजदीकी व्यक्ति को अवश्य बताएँ। • विभिन्न गतिविधियों द्वारा स्थूल माँसपेशियों के विकास के लिए अवसर प्रदान करना, जैसे— चलना, दौड़ना, कूदना, उछलना, घुटनों के बल चलना, चढ़ना, कदमताल, फेंकना, लपकना, किक मारना आदि। • नृत्य, कदमताल, लय व ताल-संबंधी अन्य गतिविधियाँ करना, जैसे— झुकना, मुड़ना, स्वयं को तानना (स्ट्रेचिंग), संतुलन बनाना आदि। • 'मैसी खेल', जैसे— रेत व पानी के साथ खेलना, मिट्टी के खेल करना, ठप्पे लगाना आदि।	

	• वस्तुओं को महसूस करके उनमें अंतर बता पाना। • कागज के छोटे-छोटे टुकड़े करके उन्हें चिपकाना, स्टीकर उतारना और चिपकाना, अँगुलियों से छोटी-छोटी वस्तुएँ उठाना आदि।	

लक्ष्य 2— बच्चों का प्रभावशाली संप्रेषक बनना		
मुख्य अवधारणाएँ/कौशल	**शैक्षणिक प्रक्रियाएँ (शिक्षक क्या कर सकते हैं?)**	**सीखने के आरंभिक प्रतिफल**
बातचीत करना और सुनना • ध्यान देने की अवधि और सुनना • रचनात्मक आत्म-अभिव्यक्ति और वार्तालाप • भाषा और सृजनात्मक चिंतन • शब्द भंडार/शब्द सामर्थ्य **आरंभिक पठन** • मुद्रित सामग्री की पहचान और अर्थ समझना • पुस्तकों से लगाव • दिशात्मकता/दिशा बोध को समझ पाना • पठन का अभिनय (प्रीटेंड रीडिंग) • ध्वनियों की पहचान • अक्षर अवबोधन/पहचानना **आरंभिक लेखन** • आँखों-हाथों का समन्वयन • उचित उपकरणों का इस्तेमाल • चिह्न लगाना, आड़ी-तिरछी रेखाएँ खींचना • आड़ी-तिरछी रेखाओं व चित्रकारी के द्वारा रचनात्मक अभिव्यक्ति **द्वितीय भाषा से परिचय**	**निम्नलिखित अवसर और अनुभव प्रदान किए जाएँ—** • ऐसे छोटे-छोटे समूहों में साझेदारी वाली खेल-संबंधी गतिविधियाँ जो बच्चों को साथ-साथ काम करने और सीखने में मदद करें और उनके सुनने के कौशलों को समुन्नत करें। • हाव-भाव के द्वारा विभिन्न प्रकार की संप्रेषण युक्तियों का प्रयोग। • कक्षा में होने वाली गतिविधि और एक गतिविधि से दूसरी गतिविधि को शुरू करते समय सरल निर्देश सुनना, जैसे— "ब्लॉक खोजो और मेरे पास लाओ, खिलौने शैल्फ में रख दो"। • दूसरों को सुनना और फिर अपनी बारी आने पर बात करना जिससे ध्यान देने की अवधि में विस्तार हो (जैसे— धीरे-धीरे कहानी का समय बढ़ाना, सीधा-सपाट परिणाम बताने वाली सामग्री का उपयोग, जैसे दो टुकड़ों (चित्रों) वाली पहेली (पजल) सुलझाना, चित्र पठन, पोस्टर को देखना और उसके आधार पर बात करना। • टेप/सीडी/मोबाइल में रिकॉर्ड की गई विभिन्न प्रकार की आवाजों को विभिन्न परिवेशों में सुनना, जैसे— घर, विद्यालय, समुदाय आदि परिवेश में सुनी गई विभिन्न प्रकार की ध्वनियाँ।	• सुनने के कौशल का इस्तेमाल करते हैं और अपनी आवश्यकताएँ बताते हैं। • दूसरों से नजरें मिलाकर बात करते हैं और शरीर के हाव-भाव का प्रयोग उपयुक्त रूप से करते हैं। • एक या दो, मौखिक निर्देशों को समझते हैं। • बातचीत और कहानियाँ सुनने/सुनाने में भाग लेते हैं और तत्कालिक अनुभवों को साझा करते हैं। • कविता-पाठ और छोटी कविताओं को दोहराते हैं, हाव-भाव से गाना, संगीत और लयात्मक गतिविधियों में भाग लेते हैं। • 'क्या' और 'क्यों' जैसे प्रश्नों को निरंतर पूछते हैं। • सामान्य/परिचित वस्तुओं और चित्रों के लिए सटीक शब्दों का प्रयोग करते हैं, जैसे— अपना नाम, मित्रों के नाम और वस्तुओं के नाम बताते हैं। • कक्षा और घर के परिवेश में मुद्रित सामग्री पहचानने लगते हैं, जैसे— अपने प्रिय बिस्कुट/टॉफी, चॉकलेट के रैपर, चित्र आदि।

	• बच्चों को रिकॉर्ड की गई ध्वनियों को सुनने के लिए प्रोत्साहित करना और ध्वनि की पहचान कराना। • छोटे-छोटे समूहों में की जाने वाली गतिविधियाँ और बच्चों द्वारा शुरू की जा सकने वाली गतिविधियाँ जो बच्चों को सवाल करने के अवसर दे सकें (उदाहरण के तौर पर— "यदि ऐसा हो तो क्या होगा…", वंडर वॉल तैयार करना जिस पर शिक्षक जिज्ञासा पैदा करने और मस्तिष्क मंथन करने के लिए नयी-नयी तस्वीरें या वस्तुएँ प्रदर्शित करें)। • वार्तालाप और कहानी सुनाते समय प्रश्न पूछने के लिए उत्प्रेरित करना (उदाहरण के तौर पर सर्कल टाइम, किसी विषय पर भी वार्तालाप और छोटे समूहों में की जाने वाली गतिविधियाँ)। • समूह में गायन, ताल-संबंधी गतिविधियाँ और छोटे-छोटे एक्शन गीत (ऐसे गीत जिनके साथ अभिनय किया जा सके) • कक्षा में मुद्रित समृद्ध परिवेश का सृजन (शैल्फ और अलमारियों/बक्सों पर लेबल लगाना, कविताएँ, पोस्टर आदि लगाना। • पठन/पुस्तकालय के क्षेत्र में चित्र, बड़े आकार वाली पुस्तकें, वर्णमाला की पुस्तकें, भाषा-संबंधी चार्ट, पोस्टर और फ्लैश कार्ड देखना। • प्रत्येक बच्चे के नाम का कार्ड बनाना और गतिविधि के दौरान बारी निर्धारित करने के लिए। • दिन-प्रतिदिन की गतिविधियों को चित्रों और मुद्रित शब्दों द्वारा प्रदर्शित करना और उनके बारे में बात करना। • बच्चों द्वारा की गई चित्रकारी/आड़ी-तिरछी रेखाओं वाली शीट पर शिक्षक द्वारा उनके नाम लिखे जाने का अवलोकन करना। • विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को पहचानना और उनकी आवश्यकताओं पर विशेष ध्यान देना।	• परिचित लिपि में लिखे हुए अपने नाम को पहचानते हैं (संकेत देने पर)। • आयु-अनुसार छोटी कहानियों का आनंद लेते हैं और सरल प्रश्नों के उत्तर देते हैं। • कहानी की किताब के चित्र देखकर परिचित कहानियाँ सुनाते हैं। किताबों का सही ढंग से इस्तेमाल करते हैं, जैसे किताब के मुख्य और पिछले पृष्ठ को पहचानते हैं और अपनी आयु के अनुकूल उपयुक्त किताबों में रुचि लेते हैं उन्हें उलट-पलट कर देखते हैं, जैसे— चित्रात्मक, वर्णमाला, कहानी, कविताओं की किताबें और पोस्टर। • आरंभिक ध्वनियों की पहचान प्रदर्शित करते हैं, जैसे— समान तुक-वाले शब्द बताते हैं, और पर्यावरण में परिचित ध्वनियों को पहचानते हैं। • विभिन्न प्रकार की सामग्री की खोजबीन और जोड़-तोड़ करते हैं, जैसे— वर्णमाला के वर्ण, (चुम्बकीय अक्षर, फोम, प्लास्टिक आदि), ठप्पा लगाने और टेढ़ी-मेढ़ी लाइनें खींचने वाले उपकरण (जिन्हें सरलता से पकड़ा जा सके)। • लेखन पूर्व कौशल का प्रदर्शन करते है (आड़ी-तिरछी लाइनें बनाना, ठप्पा लगाना, अँगुलियों से चित्रकला करना, क्रेयॉन, मार्कर, ब्रुश का विभिन्न कार्यों के लिए प्रयोग)। • बाएँ से दाहिनी ओर पूरे पृष्ठ पर आड़ी-तिरछी रेखाएँ खींचते हैं, पैटर्न दोहराते हैं और माँसपेशियों पर नियंत्रण प्रदर्शित करते हैं।

	• बच्चों को ऐसे खेलों में संलग्न करना जिनके माध्यम से वे देखकर अंतर कर पाना सीख सकें, जैसे— चित्रों, वस्तुओं, रंगों और आकृति के आधार पर मिलान करना, डोमिनों को चित्रों, रंगों/बिंदुओं आदि से मिलाना। • दृश्य-अवबोधनात्मक गतिविधियाँ, जैसे— मिलान करना, दिशाबोध, चित्रखेल/ गतिविधियाँ। • कक्षा में पठन क्षेत्र या छोटा-सा पुस्तकालय बनाना, जिसमें बड़ी पुस्तकें, चित्रात्मक पुस्तकें, जानकारीपूर्ण और स्तरवार कहानी की पुस्तकें हों। • बड़े अक्षरों में छपी, चित्रों वाली कहानी की पुस्तकों से कहानी सुनाना (शिक्षक को चाहिए कि वे शब्दों के नीचे अँगुली रखें और बाएँ से दाएँ की ओर अँगुली को फिराएँ और इस तरह से बच्चों का ध्यान लिखे हुए की ओर आकर्षित करें)। • सस्वर पढ़ना, सामूहिक पठन बच्चों को प्रतिदिन कई बार पढ़कर सुनाना। छोटे या बड़े समूहों में और एक-एक करके भी बच्चों को पढ़कर सुनाना, पृष्ठ कैसे पलटते हैं इस ओर बच्चों का पढ़ते समय ध्यान आकर्षित करना। • बच्चों को यह दिखाना कि पूरे पृष्ठ पर अँगुली कैसे फिराई जाती है, और आँखें किस तरह अँगुली का अनुसरण करती हैं (कहानी कहते समय/चार्ट से कविता पढ़ते समय या 'साइट वर्ड' को देखते समय)। • कहानी कहते समय या वार्तालाप के दौरान कठपुतली, चित्र, फ्लैश कार्ड जैसी विभिन्न प्रकार की सामग्री का उपयोग करना। • 'मुझे खोजना है' खेल खिलवाना, जैसे— मुझे कक्षा में ऐसी हरे रंग की वस्तु ढूँढनी है जिसका नाम 'स' से शुरू होता हो। • तीन छोटे-छोटे शब्द बोलना, जैसे— बिल्ली, खंबा, लंबा, बच्चों से कहना कि इनमें से वह शब्द पहचानें जिसकी ध्वनि अलग हो।	• प्राय: इस्तेमाल किए जाने वाले अंग्रेजी के शब्दों, अभिवादन एवं शिष्टाचार-युक्त शब्दों का प्रयोग करते हैं।

	• आकृतियों, उभार वाले अक्षरों से खेलना, मुद्रित समृद्ध परिवेश वाली कक्षा में परिचित अक्षरों की खोज करना। • बच्चों का ध्यान मुद्रित अक्षरों की तरफ खींचना (उनके नामों में आने वाले अक्षर, मनपसंद बिस्कुट के पैकेट, टॉफी आदि पर मुद्रित अक्षर)। • अक्षर गीत-गाना, कटआउट/चुम्बक वाले अक्षरों से खेलना, छोटे समूह में गत्ते/लकड़ी आदि पर बने अक्षरों से कोलाज बनाना। • ठप्पे लगाना, आड़ी-तिरछी रेखाएँ खींचना। • मुक्त रूप से रंग भरना, चित्रों के अंदर रंग भरना (मोटे क्रेयॉन या मार्कर का उपयोग करके)। • आँखों-हाथों समन्वयन हेतु ठोस खिलौनों/वस्तुओं/सामग्री से खेलना, जैसे बड़े छेद वाले मोतियों को पिरोना, वस्तुओं को पकड़ना, मूँठ वाली पजल पकड़ना। • ब्लॉक, पकड़ी जा सकने वाली पजल से खेलना, वस्तुओं को चुनना। • सुबह आने और जाने के समय अभिवादन करना। • प्रतिदिन की जाने वाली गतिविधियों के दौरान छोटे अंग्रेजी के शब्दों का प्रयोग करना, जैसे— गुड़ मोर्निंग, थैंक यू, वेलकम, प्लीज आदि।	

लक्ष्य 3— बच्चों का सीखने के प्रति उत्साह प्रदर्शित करना और अपने आसपास के परिवेश से जुड़ना		
मुख्य अवधारणाएँ/कौशल	**शैक्षणिक प्रक्रियाएँ (शिक्षक क्या कर सकते हैं?)**	**सीखने के आरंभिक प्रतिफल**
संवेदी विकास • देखना • सुनना • छूना • सूँघना • चखना	**निम्नलिखित अवसर और अनुभव प्रदान किए जाएँ—** • संवेदी विकास से संबंधित गतिविधियाँ— चखना, सूँघना, देखना, सुनना और छूना। उदाहरण के तौर पर, वास्तविक ठोस पदार्थों का उपयोग, दृश्यात्मक समन्वयन और विभेदीकरण, श्रवण विभेदीकरण गतिविधियाँ आदि।	

संज्ञानात्मक कौशल

- अवलोकन
- पहचान करना
- स्मृति/याद करना
- मिलान करना
- वर्गीकरण करना
- नमूने बनाना
- क्रम के अनुसार सोचना
- सृजनात्मक चिंतन
- समीक्षात्मक चिंतन
- समस्या समाधान
- तर्क प्रस्तुत करना
- जिज्ञासा
- प्रयोग करना
- खोजबीन करना

अवधारणाओं का निर्माण

- रंग, आकृति, दूरी, नाप, आकार, लंबाई, भार, ऊँचाई, समय आदि।
- स्थान-बोध
- एक-से-एक की संगतता

संख्या-बोध

- गिनना और बताना कि कितने हैं।
- संख्याओं की पहचान
- क्रम का बोध (5 तक किसी भी दी गई संख्या से आगे गिनती कर पाना)

परिवेश से संबंधित अवधारणाएँ

- प्राकृतिक— पशु, फल, सब्जियाँ, खाद्य पदार्थ, जीव-जंतु
- भौतिक— जल, वायु, मौसम, सूर्य, चंद्रमा, दिन और रात
- सामाजिक— मैं, परिवार, यातायात, त्यौहार, हमारे सहयोगी, समुदाय

- प्रकृति भ्रमण के दौरान आसपास के परिवेश की विभिन्न वस्तुओं का अवलोकन, जैसे— पार्क, उपवन, चिड़ियाघर आदि।
- खेल, गतिविधि, वस्तुओं, पिक्चर कार्ड, ट्रे में से चुनने वाले खेल, मेमोरी कार्ड/खेलों द्वारा दृश्य विभेदीकरण, वर्गीकरण-संबंधी गतिविधियाँ।
- चित्रपठन पोस्टर का इस्तेमाल करके, बच्चों को चित्र देखने और उसके बारे में बात करने के लिए प्रोत्साहित करना।
- किसी एक श्रेणी के आधार पर पिक्चर कार्डों को छाँटना और मिलाना, जैसे— एक डिब्बे में सभी जानवरों के चित्र रखना और दूसरे डिब्बे में पक्षियों के चित्र रखना, एक कटोरी/डिब्बे में पीले बटन/ब्लॉक रखना।
- दिए गए नमूने को दोहराना, सही क्रम में घटनाओं व कहानियों को याद रखना।
- वस्तुओं और चित्र कार्डों की सहायता से क्रम में लगाना।
- मेज (भूल-भूलैया) को हल करना, सरल पहेलियाँ बूझना, 2–3 टुकड़ों की पजल को व्यवस्थित रूप से लगाना।
- संबंध सूचक कार्डों के माध्यम से समस्या-समाधान (चित्रों के मिलान करना, संबंध ढूँढना, जैसे कप-प्लेट/कंघी-बाल आदि।
- सरल समस्याओं के समाधान खोजना, जैसे— बोतल पर उसी के नाप का ढक्कन ढूँढना, ढ़क्कन बंद करना व खोलना।
- परिचित चित्र में कोई एक-दो गायब भाग ढूँढना/पहचानना।
- रेत, पानी, खोजबीन क्षेत्र में उपयुक्त खिलौने, उपकरण आदि, जैसे— सैंड ट्रे, पानी का टब, छननी, पानी के डिब्बों, बेलचा, खुरपी, तैरने वाले खिलौनों से खेलना।
- रचनात्मक गतिविधियों के दौरान रंगों की पहचान।

- परिवेश के अवलोकन के लिए सभी इंद्रियों का प्रयोग करते हैं।
- सामान्य वस्तुओं, ध्वनियों, लोगों, चित्रों, पशु-पक्षियों, विभिन्न अवसरों/घटनाओं को पहचानकर उनके नाम बताते हैं।
- एक समय में देखी गई दो-तीन वस्तुओं के नाम याद रखते हैं और पुनः बताते हैं।
- परिचित वस्तुओं के चित्र को देखकर जो उसमें नहीं है उस हिस्से को पहचानते हैं।
- किसी एक बिंदु के आधार पर वस्तुओं की तुलना और वर्गीकरण करते हैं।
- सरल नमूनों को समझकर उसे आगे बढ़ते या दोहराते हैं।
- दो-तीन चित्र कार्ड/वस्तुओं को क्रम से लगाते हैं।
- दिन-प्रतिदिन की सरल समस्याओं को स्वयं या बड़ों की मदद से सुलझाते हैं।
- वस्तुओं के बीच संबंधों को समझने लगते हैं, जैसे समूह से भिन्न वस्तु, पूरी वस्तु या उसके किसी भी भाग की पहचान, मिलती-जुलती वस्तुएँ, जैसे— सुई-धागा, ताला-चाबी।
- अपने आसपास के परिवेश के प्रति जिज्ञासा दिखाते हैं और उससे संबंधित प्रश्न पूछते हैं।
- मूल रंगों और आकारों को पहचानते हैं।
- प्रत्यक्ष विशेषताओं के आधार पर दो वस्तुओं की तुलना करते हैं, जैसे— हल्का-भारी, लंबा-छोटा, ज्यादा-कम, बड़ा-छोटा, ठंडा-गर्म आदि।
- दो-तीन वस्तुओं को एक से एक की संगतता में रखते हैं।

तकनीक का प्रयोग	• तरह-तरह के खेल, गतिविधियों का आयोजन करना, जिनमें वस्तुओं, फ्लैश कार्ड, डोमिनो द्वारा विभिन्न अवधारणाओं के प्रति समझ बनाना। • विभिन्न अवधारणाओं से संबंधित गीत और अभिनय वाले शिशुगीत गाना। • सर्कल टाइम के दौरान विभिन्न अवधारणाओं से संबंधित चित्र/पोस्टर दिखाना और उन पर बात करना। • बड़े और मोटे ब्रुश/क्रेयॉन का उपयोग करते हुए रचनात्मक कला-संबंधी गतिविधियाँ। • कप, कटोरी आदि मापन पात्रों का उपयोग। • छाया वाले खेल खेलना। • संख्या वाले गीत गाना, संख्या वाली कहानियाँ सुनना। • संख्याओं का मिलान करने के लिए डोमिनो, फ्लैश कार्ड का उपयोग करना। • अपने आसपास के परिवेश में संख्याओं और चिह्नों की पहचान, जैसे— मोबाइल फोन में नंबर, कलैंडर आदि में संख्याओं की पहचान। • खेलों, चलने-फिरने वाली गतिविधियों के माध्यम से स्थान से संबंधित समझ पैदा करना, जैसे— अंदर-बाहर, ऊपर-नीचे। • जिन जगहों का भ्रमण किया गया हो वहाँ के चित्र बनाना और उन पर बातचीत करना। • प्रश्न पूछना और उत्तर देना। • 'सर्कल टाईम' की गतिविधि के दौरान पर्यावरण से संबंधित मुद्दों पर बातचीत करना, जैसे— पानी बर्बाद नहीं करना, मंजन करते समय जब जरूरत न हो तो नल बंद कर देना, कूड़ा कूड़ेदान में डालना, खेल खेलने के बाद खिलौने उपयुक्त स्थान पर रख देना आदि। • शिक्षक की निगरानी में आयु के उपयुक्त तकनीकी का उपयोग। • अंतः क्रियात्मक व आयु-अनुरूप वैबसाइट, शैक्षिक वीडियो और सॉफ्टवेयर का उपयोग। • कहानियों को स्व-स्वर पढ़कर सुनाना और उनकी वीडियो को दिखाना।	• माँगने पर तीन तक वस्तुएँ गिनकर देते है। • परिवेश के प्रति जागरूकता एवं संवेदनशीलता दर्शाते हैं। • टेलीविजन/स्मार्ट बोर्ड पर गीतों, कविताओं को देखकर आनंदित होते हैं।

पूर्व-प्राथमिक विद्यालय II
(आयु 4–5 वर्ष)

टिप्पणी

1. मुख्य अवधारणाओं, प्रस्तावित शिक्षण प्रणाली की प्रक्रियाओं और सीखने के आरंभिक प्रतिफलों को एक-से-एक मिलाना अपेक्षित नहीं है। इन्हें समग्र रूप में देखा जाना चाहिए।
2. इन सीखने के प्रतिफलों का विकास इस मान्यता के साथ किया गया है कि पूर्व-प्राथमिक विद्यालय में प्रथम भाषा/निर्देश की भाषा, घर में बोली जाने वाली भाषा या क्षेत्रीय भाषा ही होगी। अंग्रेजी भाषा का उपयोग द्वितीय भाषा के रूप में किया जाना चाहिए।

लक्ष्य 1— बच्चों का अच्छा स्वास्थ्य और खुशहाली बनाए रखना		
मुख्य अवधारणाएँ/कौशल	**शैक्षणिक प्रक्रियाएँ (शिक्षक क्या कर सकते हैं)**	**सीखने के आरंभिक प्रतिफल**
• स्वयं और दूसरों के प्रति जागरूकता • स्वयं के प्रति सकारात्मक अवधारणा का विकास • आत्मनियमन • निर्णय लेना और समस्या समाधान • सामाजिक रूप से वाँछनीय व्यवहार (प्रो-सोशल, जैसे— एक-दूसरे का ख्याल रखना, साझेदारी, सहयोग, दया और दूसरों की भावनाओं व अधिकारों का सम्मान करना अच्छी आदतों का विकास, साफ-सफाई और स्वयं की सुरक्षा के प्रति जागरूकता • स्थूल गत्यात्मक कौशलों का विकास (चलना, दौड़ना, कूदना, उछलना, घुटनों के बल चलना, चढ़ना, कदमताल, फेंकना, लपकना, किक मारना आदि)	**निम्नलिखित अवसर और अनुभव प्रदान किए जाएँ—** • बच्चे अपने बारे में, अपने शरीर के अंगों के बारे में अपने परिवार के सदस्यों और गणमान्य व्यक्तियों के बारे में और उनसे संबंधों के बारे में जानें। • बच्चों के जन्मदिवसों, त्यौहारों के आयोजन द्वारा बच्चों को छोटे-छोटे उत्तरदायित्व देकर उनके योगदान/कार्य की सराहना करके एवं उनके कार्य के प्रदर्शन द्वारा उनमें स्वयं के मूल्य और अपनी उपलब्धियों पर गर्व की अनुभूति करने के अवसर प्रदान करना। • दूसरों के साथ काम करते हुए नियमों की पहचान व समझ बनाना, जैसे— समूह में की जाने वाली गतिविधियाँ, भिन्न-भिन्न गतिविधि क्षेत्रों में खेलना और कहानी सुनाना आदि।	• अपनी शारीरिक विशेषताओं का वर्णन करते हैं। • निकट के पारिवारिक सदस्यों, मित्रों और पड़ोसियों को पहचानने लगते हैं। • अपनी प्राथमिकताएँ और रुचियाँ अभिव्यक्त करते हैं। • निर्देशों का पालन करते हैं। • कक्षा में और दूसरे बच्चों के साथ सामंजस्य बिठाते हैं। • आरंभ की गई गतिविधि को पूरा करते हैं। • स्थिति विशेष के अनुरूप भावनाओं को प्रकट करते हैं। • अपनी प्राथमिकताएँ, रुचियाँ प्रदर्शित करते हैं और उनके आधार पर चयन करते हैं।

• सूक्ष्म गत्यात्मक कौशलों का विकास और आँखों-हाथों समन्वयन (धागा पिरोना, कागज के छोटे-छोटे टुकड़े फाड़ना, चिपकाना, आड़ी-तिरछी रेखाएँ खींचना, चित्रकारी, रंग भरना, छपाई करना (ठप्पे लगाना), कागज मोड़कर वस्तुएँ बनाना आदि)	• ऐसी कहानियों को पढ़कर सुनाना या फिर ऐसे कठपुतली के खेलों का आयोजन करना जिनमें पात्र साझेदारी की भावना प्रदर्शित करते हों, मदद और सहयोग जैसे मूल्य प्रदर्शित करते हों। • बच्चों में उत्तरदायित्व से जुड़े संबंधों को पोषित करना जिससे बच्चों को अपनी भावनाओं को नियंत्रित करने, सुरक्षा का भाव महसूस करने, आत्मविश्वास जागृत करने, जिज्ञासु और संप्रेषक बनने में मदद मिल सके। • समस्या-समाधान और द्वंद्व की स्थिति से निपटने के लिए विकल्प ढूँढना और प्रयास करना (रोल-प्ले, छोटे समूहो में की जाने वाली गतिविधियों के दौरान, पहेलियाँ सुलझाते समय)। • मुक्त खेल जिनमें बच्चों को स्वतंत्र और समूहों में भी खेलने के अवसर मिलें, जैसे— पहेलियाँ सुलझाना, पेग (शंकु) रखना, बाहर खेले जाने वाले खेल आदि। • प्रश्न पूछना, दूसरे की स्थिति को समझना, तदानुभूति प्रकट करना और विभिन्न समस्यात्मक स्थितियों में कहानियाँ सुनाकर समस्याओं के समाधान ढूँढना। • कहानी के दौरान या कहानी सुनाने के बाद बच्चों से प्रश्न पूछना कि वे समस्या किस प्रकार सुलझाएँगे। • दूसरे बच्चों के साथ अंतःक्रिया करना और संबंध बनाना। साथियों से सीखने और उनके साथ अंतःक्रिया की प्रवृति को विकसित करने के मौके देना। • अपनी भावनाओं को महसूस और व्यक्त करना। • बच्चों द्वारा अनुभव की गई असुविधाओं, स्थिति व चिंता (यदि कोई हो) को साझा करना।	• द्वंद्व की स्थिति में समाधान सुझाते हैं (मार्गदर्शन के साथ कर पाते हैं)। • दूसरे बच्चों के साथ मिलजुल कर खेलते हैं। • योजना बनाते हैं कि क्या खेलेंगे और कैसे खेलेंगे। • एक-दूसरे का ध्यान रखने वाला व्यवहार प्रदर्शित करते हैं (चूमना, आलिंगन, थपथपाना), दूसरे बच्चों के साथ अपनी चीजें साझा करते हैं। • विशेष आवश्यकता वाले बच्चों सहित भिन्न-भिन्न पृष्ठभूमि वाले बच्चों के प्रति संवेदनशीलता प्रदर्शित करते हैं और उनके प्रति स्वीकृति का भाव रखते हैं। • स्वच्छता एवं सफाई रखते हैं और भोजन संबंधी अच्छी आदतों में आत्मनिर्भरता का प्रदर्शन करते हैं। • खतरा/नुकसान पहुँचाने वाली स्थितियों को भाँपते हैं और सुरक्षात्मक उपाय अपनाते हैं। • अच्छे स्पर्श और बुरे स्पर्श के अंतर की समझ को दर्शाते हैं और अपरिचित व्यक्तियों से दूरी बनाए रखते हैं। • खेल-संबंधित गतिविधियों में (जैसे— चलना, दौड़ना, कूदना, चढ़ना आदि) स्थूल गत्यात्मक समन्वयन और नियंत्रण प्रदर्शित करते हैं।

	• सरल हाव-भाव और चिह्न की पहचान • विशेष आवश्यकता वाले बच्चें के अनुरूप गतिविधियों का सामंजस्य करके अन्य बच्चों के साथ सामंजस्य स्थापित करना। • बड़ों की सहायता से शौचालय का उपयोग एवं हाथ धोना आदि। • स्वास्थ्य की सार्वधिक जाँच (कद, वजन, सामान्य स्वास्थ्य), टीकाकरण तथा बच्चों की सुरक्षा सुनिश्चित करना। • पूर्व-प्राथमिक विद्यालय में पूरक पोषण का प्रावधान। • बच्चों, अभिभावकों और समुदाय को स्वास्थ्य व पोषण की शिक्षा देना। • बच्चों को कहानियों, कार्टून, फिल्मों, वीडियो, रोल-प्ले द्वारा शरीर के निजी अंगों के बारे में बताना और यह भी बताना कि उनके निजी अंग की न तो किसी अन्य द्वारा छुए जाने चाहिए ना ही फोटो खींची जानी चाहिए, उन्हें यह भी बताना चाहिए कि वे भी किसी दूसरे के निजी अंगों को न छुएँ। • बच्चों को इस बारे में संवेदनशील बनाना कि कोई भी उनके प्रति शारीरिक या मानसिक दुर्व्यवहार करता है तो तुरंत शिक्षक या अपने किसी नजदीकी को बताएँ। • सुरक्षित सामग्री प्रयोग और सुरक्षित परिवेश का निर्माण करना जो कौशल स्तर के अनुरूप भिन्न-भिन्न हों, जैसे— तीन पहिए वाली साइकिल, 'हल्ला हूप', संतुलन पट्टी (बैलेंसिंग बीम)। • विभिन्न कौशलों का अभ्यास, जैसे— कूदना फाँदना, पकड़ना, फेंकना आदि। • बच्चों को नृत्य, एक्शन गीत जिसमें सरल शारीरिक गतिविधियाँ शामिल हों, जैसे— घूमना, शरीर को लय-ताल के अनुसार हिलाना-डुलाना आदि। • रेत, बालू, मिट्टी और पानी के खेत (मैसी प्ले), छापना आदि।	• सूक्ष्म गत्यात्मक कौशलों का प्रदर्शन करते हैं और जिन कामों में अपेक्षाकृत आँखों और हाथों के समन्वय की अधिक आवश्यकता है उन कामों में मध्यम स्तरीय स्पष्टता और नियंत्रण प्रदर्शित करते हैं, जैसे— आकृतियों को काटना, चित्रकारी करना, रंग भरना, धागे में मोती पिरोना, फीते बाँधना, देखकर चित्र/आकृति बनाना, कागज के छोटे टुकड़े करना और चिपकाना।

	• खेल जहाँ बच्चे स्वतंत्र रूप से कोई भी आकार बनाते हैं, जैसे— संगीतमय खेल, गिनती के खेल, पहाड़ में आग लगी... भागो-भागो-भागो जिसमें स्थान बोध, दूरी एवं दिशा का ज्ञान हो। • एकल, जोड़े में, छोटे समूह एवं बड़े समूह की गतिविधियाँ जिसमें स्थूल माँसपेशियाँ विकसित करने के कौशल शामिल हों। • अँगूठे एवं अँगुलियों से पेंसिल पकड़ने के कोशल का अभ्यास, जैसे— फाड़ना, काटना और चिपकाना, छीलना/स्टीकर चिपकाना, अँगुलियों से वस्तुएँ चुनना। • जोड़-तोड़ वाली वस्तुओं का इस्तेमाल करते हुए जो छाँटने, मिलान करने, कल्पना करने को प्रोत्साहन देती हैं, के प्रत्यक्ष अनुभव करना।	

लक्ष्य 2— बच्चों का प्रभावशाली संप्रेषक बनना		
मुख्य अवधारणाएँ/कौशल	**शैक्षणिक प्रक्रियाएँ (शिक्षक क्या कर सकते हैं?)**	**सीखने के आरंभिक प्रतिफल**
बातचीत करना और सुनना • ध्यान देने की अवधि और सुनना • बातचीत के नियम तौर-तरीके • रचनात्मक आत्म-अभिव्यक्ति और वार्तालाप • भाषा और सृजनात्मक चिंतन • शब्द भंडार/शब्द सामर्थ्य **आरंभिक पठन** • मुद्रित सामग्री की पहचान और अर्थ समझना • दृश्य विभेदीकरण • पुस्तकों से लगाव • दिशात्मकता/दिशा बोध को समझ पाना • पठन का अभिनय • ध्वनियों की पहचान • अक्षर अवबोधन/पहचानना	**निम्नलिखित अवसर और अनुभव प्रदान किए जाएँ—** • मुक्त और निर्देशित वार्तालाप तथा हाव-भाव और अन्य तरह की सांकेतिक अभिव्यक्तियों को शामिल करते हुए विभिन्न प्रकार की संप्रेषण युक्तियों का इस्तेमाल करने में बच्चों की मदद करना। • दूसरों को सुनना और बारी आने पर बोलना। • ऐसे शिशु गीत और गानों में अभिनय के साथ भाग लेना जिनमें तुकबंदियाँ हों और पुनरावृत्ति हो। • चित्र-पठन एवं बातचीत • शब्द-भंडार का विकास करने वाले खेल • बोलते-बात करते, कहानी सुनाते और चित्र वर्णन के समय विवेचनात्मक प्रश्न पूछकर सोच को उत्प्रेरित करना।	• दूसरों को थोड़े समय के लिए सुनते हैं और अपनी प्रतिक्रिया देते हैं, सामाजिक व्यवहार के कुछ तौर-तरीके प्रदर्शित करते हैं, जैसे— बात करना व सुनते समय आँखें मिलाना। • आवश्यकताओं और विचारों को मौखिक और सांकेतिक रूप से संप्रेषित करते हैं। • मौखिक रूप से बोले गए सरल निर्देशों का अनुसरण करते हैं। • वार्तालाप में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं और व्यक्तिगत अनुभव, पसंद/नापसंद साझा करते हैं। • छोटी-छोटी कविताएँ, अभिनय गीत समझ के साथ गाते हैं और लयात्मक गतिविधियों में भाग लेते हैं।

आरंभिक लेखन • आँखों और हाथों का समन्वयन • उचित उपकरणों का इस्तेमाल • चिह्न लगाना, आड़ी-तिरछी रेखाएँ खींचना • आड़ी-तिरछी रेखाओं व चित्रकारी के द्वारा रचनात्मक अभिव्यक्ति **दूसरी भाषा से परिचय**	• आसपास के परिवेश में मुद्रित/लिखित सामग्री का अवलोकन और उन्हें खोजना (परिचित चिह्न, टॉफी/बिस्किट आदि के रैपर पर प्रतीक चिह्न (लोगो), नाम-ठप्पे आदि को पढ़ना)। • कक्षा में मुद्रित समृद्ध परिवेश का सृजन (वस्तुओं, शैल्फ, पोस्टर आदि पर लेबल लगाना)। • मिलकर पढ़ना (सामूहिक पठन) (स्तरवार पठन सामग्री हो, ताकि बच्चे अक्षर/शब्द (प्रिंट) पर अँगुली रखें और उसकी ध्वनि से मिलाकर पढ़ सकें)। • कक्षा में बच्चों द्वारा सरलतापूर्वक देखे जाने वाली ऊँचाई पर प्रदर्शित चिह्न, कविताओं और चित्रों को देखना। • दिन-प्रतिदिन की गतिविधियों से संबंधित प्रदर्शित चित्र व शब्दों को देखना और पढ़ना तथा उनके बारे में बात करना (प्रातःकालीन गतिविधि के रूप में, किसी बड़े की मदद से)। • शब्द-दीवार, श्वेतपट्ट, श्यामपट्ट पर लिखी हुई सामग्री को देखना और मजे-मजे में अक्षरों/शब्दों की पहचान करना। • वार्तालाप और सस्वर वाचन के दौरान शब्दों के खेल करना जैसे— तुकबंदी। • देखकर अंतर बता पाने वाले खेल (इनमें अलग क्या है? क्या नहीं है?) खेलना। • कक्षा में 'पठन क्षेत्र' या 'छोटा-सा पुस्तकालय क्षेत्र' बनाना और इसमें चित्रात्मक पुस्तकें, सूचनात्मक पुस्तकें, स्तरवार कहानी की पुस्तकें रखना। • विभिन्न प्रकार की आयु-उपयुक्त कहानियाँ (10–15 मिनट की अवधि वाली) जो मौखिक, सामग्री के साथ चित्रों व कठपुतली आदि की सहायता से सुनाई जा सकें।	• गतिविधियों और वार्तालाप के दौरान प्रश्न पूछते हैं और उचित उत्तर देते हैं। • शब्द भंडार में और नए शब्द सीखने में रुचि प्रदर्शित करते हैं। • परिवेश में दिखने वाले परिचित संकेतों, प्रतीक चिह्न (लोगो), लेबल आदि को पहचानते हैं। • छोटी कहानी को क्रम में दोहराते हैं और कहानी की मुख्य घटनाओं का अभिनय करते हैं। • अपने शब्दों में अपनी ही कोई कहानी सृजित करते हैं। • मुद्रित सामग्री को पढ़ने से संबंधित व्यवहार प्रदर्शित करते हैं। ऊपर से नीचे और बाएँ से दाएँ या दाएँ से बाएँ। (लिपि के अनुसार) इस बात की समझ को दर्शाते हैं कि मुद्रित सामग्री में अर्थ निहित होता है। • कहानी की किताबों के पृष्ठ एक-एक करके पलटते हैं और स्वयं पढ़ने का अभिनय करते हैं। • तुकबंदी वाले शब्दों का आनंद उठाते हैं और उन्हें याद रखते हैं। • सरल शब्दों की शुरू की ध्वनि पहचानते हैं। • शब्दों में ध्वनियों को पहचानकर उनके अनुसार तालियाँ बजाते हैं। • शब्दों में से कुछ अक्षरों और उनकी ध्वनियों को पहचानते हैं (सहायता करने पर)। • अपना आरंभिक लेखन और चित्रकारी दूसरों के साथ साझा करने में आनंद का प्रदर्शन करते हैं। • लेखन व रंग भरने से संबंधित उपकरणों में रुचि प्रदर्शित करते हैं। • अपने विचार दर्शाने के लिए चित्रकारी करते हैं, कुछ चिह्न बनाते हैं और उनका वर्णन भी करते हैं।

	• बच्चों को भाषा के लिखित स्वरूप से परिचित करवाने के लिए कहानी की पुस्तकों को ऊँची आवाज में पढ़कर सुनाना (छोटी सरल व अर्थपूर्ण पठन सामग्री जिनसे बच्चे जुड़ाव महसूस कर सकें)। • बच्चों को यह दर्शाना कि किसी पृष्ठ को पढ़ते समय अँगुली रखकर कैसे घुमाया जाता है (कहानी सुनाने के समय/चार्ट पर लिखी कविता पढ़ते समय या 'साइट शब्द' की ओर देखते हुए)। • कक्षा में सृजित पठन क्षेत्र या छोटे से पुस्तकालय क्षेत्र में पुस्तकों को उलट-उलट कर देखने के अवसर देना (पृष्ठ पलटना, पुस्तकों को देखना, पढ़ने का अभिनय करने के लिए प्रोत्साहित करना)। • ध्वनियों के उतार-चढ़ाव के प्रति जागरूकता-संबंधी गतिविधि (ध्वन्यात्मक शब्द, तुकबंदी वाले शब्द) उदाहरण के तौर पर, ध्वन्यात्मक खेल जिसमें शुरू व अंत वाली ध्वनियों की पहचान पर जोर हो, मिलती-जुलती ध्वनि वाले खेल-खेलना)। • शिशुगीत गाते समय या जोर से पढ़कर सुनाते समय तुकबंदी (मिलती-जुलती ध्वनि वाले शब्द को छोड़ देना और ध्यान आकर्षित करने के लिए थोड़ा रुकना) फिर बच्चों से पूछना कि अब आगे क्या आएगा, उदाहरण के तौर पर, शिक्षक कह सकते हैं— हाँ, यह बिल्कुल सही है, जैसे— 'छप्पर', 'टप्पर'। • अक्षर खेल-चित्र/वस्तुओं के डोमिनो (मास्क)। • बड़े अक्षरों (केपिटल लेटर), छोटे अक्षरों (स्मॉल लेटर) से मिलान का खेल और गतिविधियाँ। • अक्षरों की पहचान एवं अक्षर और उसकी ध्वनि में तालमेल।	• प्रायः इस्तेमाल हो रहे अंग्रेजी के शब्दों का प्रयोग करते हैं— अभिवादन में, विनम्र अभिव्यक्ति में, जैसे— थैंक यू, प्लीज/घर की भाषा या अंग्रेजी में, अभिवादन का जवाब देते हैं।

	• बड़ों की मदद से स्वयं की चित्र/अक्षर/ संख्या पुस्तक बनाना। • मोटे क्रेयोन और मार्कर का प्रयोग कर अक्षर बनाना, रेत से भरी ट्रे और अखबार में छिपे हुए अक्षरों को ढूँढना और पहचानना। • आँखों-हाथों के समन्वयन को समुन्नत करने के लिए आसानी से पकड़ी जाने वाली सामग्री से काम करना, जैसे— मोती पिरोना। • जब शिक्षक बच्चों के नाम लिखें, उनकी उपस्थिति लें या अभिभावक के लिए कोई सूचना लिखे तब बच्चों को देखने के अवसर देना (मॉडल्ड राइटिंग)। • विभिन्न प्रकार के कागजों पर आड़ी-तिरछी रेखाएँ बनाना • रंग भरना (मुक्त रूप से या शिक्षक द्वारा बनाकर दिए गए चित्रों में)। • ट्रेस करना, बिंदु मिलाना • तरह-तरह की आड़ी-तिरछी लकीरें खींचना/नमूने बनाना/अक्षर बनाना जो बाद में अक्षर पढ़ने-लिखने में मदद करेंगे। • ऑडियो-वीडियो के माध्यम से अंग्रेजी भाषा के आसान शब्दों को सुनना। • बच्चे के फोटो और प्रतीक चिह्न (लोगो) के साथ नाम का कार्ड बनाकर लगाना (हर बच्चे को एक चित्र दिया जाए जो उस नाम से मिलता-जुलता हो)। • छोटी-छोटी कविताओं को सुनना, दोहराना और स्वतंत्र रूप से गाना। • सुबह आने व जाने के समय अभिवादन करना और दिन-प्रतिदिन की गतिविधियों में विनम्रतासूचक शब्दों का प्रयोग करना। • अंग्रेजी भाषा में छोटी-छोटी कहानियाँ सुनना। • 'साइट वर्ड्स' और कहानी में प्रायः आने वाले शब्दों का लिखकर प्रदर्शन।	

लक्ष्य 3— बच्चे द्वारा सीखने के प्रति उत्साह प्रदर्शित करना और अपने आसपास के परिवेश से जुड़ना		
मुख्य अवधारणाएँ/कौशल	**शैक्षणिक प्रक्रियाएँ (शिक्षक क्या कर सकते हैं?)**	**सीखने के आरंभिक प्रतिफल**
संवेदी विकास • देखना • सुनना • छूना • सूँघना • चखना **संज्ञात्मक कौशल** • अवलोकन • पहचान करना • स्मृति/याद करना • मिलान करना • वर्गीकरण करना • नमूने बनाना • क्रम के अनुसार सोचना • सृजनात्मक चिंतन • समीक्षात्मक चिंतन • समस्या समाधान • तर्क प्रस्तुत करना • जिज्ञासा • प्रयोग करना • खोजबीन करना **अवधारणाओं का निर्माण** • रंग, आकृति, दूरी, नाप, आकार, लंबाई, भार, ऊँचाई, समय • स्थान-बोध • एक-से-एक की संगतता **संख्या बोध** • गिनना और बताना कि कितने हैं	**निम्नलिखित अवसर और अनुभव प्रदान किए जाएँ—** • चखने, सूँघने, देखने, सुनने व छूने जैसे संवेदों के विकास हेतु संवेदी विकास गतिविधियाँ, जैसे— बनावट को छूने वाले खेल, आवाज निकालने वाली डिब्बियों के खेल। • उभार की हुई सामग्री से खेल-खेलना, जैसे— पकड़ सकने वाली पजल आदि। • नजदीक के पार्क/उपवन, चिड़ियाघर आदि का भ्रमण। • प्रकृति भ्रमण के दौरान अपने आसपास के परिवेश में तरह-तरह की वस्तुएँ देखना। • संवेदों के विकास के लिए तैयार की गई ट्रे से संबंधित गतिविधियाँ, जैसे— चखना, सूँघना, आदि। • दृश्य-विभेदीकरण कार्ड, चित्र-पठन के लिए पोस्टर, स्मृति कार्ड। • चित्र में गायब हुए हिस्से की पहचान करना। • 'क्या गायब है', खेल खेलना • ठोस वस्तुओं का उपयोग करते हुए मिलान करना, चुनना, वर्गीकरण आदि। • दो श्रेणियों के आधार पर चुनना, जैसे— आकृति और रंग (नीले चौकोर, पीले तिकोने आदि)। • परिवेश में उपलब्ध विभिन्न सामग्री का उपयोग करते हुए सरल नमूनों की नकल करना, जैसे— आकार, रंग। • उपयुक्त शब्दों का प्रयोग करते हुए उनमें कहानी के कार्डों को क्रम में लगाना। • चित्र-पठन।	• परिवेश का अवलोकन और खोजबीन करने के लिए पाँचों इंद्रियों का प्रयोग करते हैं। • सामान्य वस्तुओं, ध्वनियों, लोगों, तस्वीरों, पशुओं, चिड़ियों, घटनाओं आदि का वर्णन करते हैं। • एक बार में देखी गई वस्तुओं में से 3–5 गायब हिस्सों की पहचान करते हैं। • वस्तुओं के समूह को दो श्रेणियों के आधार पर वर्गीकृत करते हैं। • सरल नमूने को दोहराते समय नमूने की इकाई को पहचान कर आगे बढ़ाते हैं। • 3–4 चित्र कार्ड/वस्तुओं को क्रम से लगाते हैं। • विभिन्न घटनाओं या कहानियों को क्रम से बताते हैं। • संबंधों के प्रति कौशल को दर्शाते हैं, जैसे— एक हिस्सा या समूची वस्तु, भिन्न वस्तुओं की पहचान, संबंध जोड़ना आदि। • स्थितियों का विश्लेषण करते हैं, तदनुसार सोचते हैं और कार्य करते हैं। • प्रयोग करने में आनंद लेते हैं, अपने आसपास के भौतिक सामाजिक और जैवकीय परिवेश के बारे में जिज्ञासा प्रकट करते हैं। • किसी वस्तु को उसके दो से अधिक घटकों के आधार पर तुलना एवं वर्गीकृत करते हैं, जैसे— आकृति और रंग, आकार एवं आकृति।

• संख्याओं की पहचान • क्रम का बोध (10 तक किसी भी दी गई संख्या से आगे गिनती कर पाना) **परिवेश से संबंधित अवधारणाएँ** • प्राकृतिक— पशु, फल, सब्जियाँ, खाद्यपदार्थ, जीव-जंतु • भौतिक— जल, वायु, मौसम, सूर्य, चंद्रमा, दिन और रात • सामाजिक— मैं, परिवार, यातायात, त्यौहार, हमारे सहयोगी, समुदाय **तकनीक का प्रयोग**	• दृश्य अवबोधन गतिविधियाँ • 4–5 टुकड़ों वाले पज़ल को पूरा करना। • आसान समस्या समाधान के लिए प्रश्नों के उत्तर खोजना, जैसे अगर बारिश हो रही हो तो तुम स्कूल कैसे जाओगे? • विवेचनात्मक सवालों के उत्तर देना, जैसे— क्या हमें फूल तोड़ने चाहिए? • सृजनात्मक चिंतन और आसान-सी समस्याओं के समाधान ढूँढना, जैसे कोई ऐसा खिलौना जो अलमारी के ऊपर रखा है, अगर आपको चाहिए तो आप क्या करेंगे? • ऐसे विवेचनात्मक सवाल पूछना जो उनकी खोजी प्रवृति को विकसित करें और उनके चिंतन को विस्तार दें और सूचनाओं को हासिल करने की क्षमता का विकास करें। • सरल से मापक उपकरणों, जैसे— कप, गिलास, जार और अमानक वस्तुओं (जैसे— मुट्ठी भर बीज/टॉफी, एक कप पानी/दूध, चुटकी भर नमक आदि) का उपयोग करते हुए वस्तुओं का मापन करना। • गणित से संबंधित शब्दावली का प्रयोग करना, जैसे— अंदर-बाहर, ऊपर-नीचे आदि। • आसपास के परिवेशों में संख्याओं और चिह्नों की पहचान करना। • संख्या बोध वाले गीत गाना और खेल खेलना, स्वयं से सही जुड़ने वाली पहेलियों को हल करना। • आसपास के परिवेश के वास्तविक संदर्भों में सीखना, खोजबीन और अन्वेषण से संबंधित परियोजनाओं का क्रियान्वयन, बातचीत, समस्या समाधान, प्रश्न पूछना, सूचनाओं का आदान-प्रदान, विचार-विनिमय, मौजूदा ज्ञान और कौशलों पर विमर्श एवं सूचनाओं का समावेशन।	• दशा/स्थिति को दर्शाने वाले शब्दों का सही प्रयोग करते हैं। • किसी वस्तु के विशेष गुणों के आधार पर 5 वस्तुओं को क्रम देते हैं। • 4–5 वस्तुओं को एक-से-एक की संगतता में रखते हैं। • कहने पर 5 वस्तुएँ तक गिन कर लेते और देते हैं। • पाँच तक के अंकों को पहचान लेते हैं और तदनुरूप संख्या का बोध कर लेते हैं। • अपने आसपास के परिवेश के प्रति जिज्ञासा अभिव्यक्त करते हैं, और प्रश्न पूछते हैं तथा संबंधित अवधारणाओं का विकास करते हैं। • परिवेशीय मुद्दों के प्रति जागरूकता और संवेदनशीलता प्रदर्शित करते हैं। • तकनीकी के प्रति जागरूकता प्रदर्शित करते हैं।

	• जागरूकता विकसित करने वाली गतिविधियाँ, जैसे— पानी बेकार न करना, पौधों को पानी देना, बत्तियाँ प्रयोग के बाद बंद कर देना आदि। • शिक्षक की निगरानी में तकनीकी दुनिया से पहचान— ड्रैग एंड ड्रॉप, डिजिटल ड्राइंग/चित्रकारी, वेबसाइट का उपयोग/शैक्षिक वीडियो/डिजिटल कथा/ई-पुस्तकें आदि। • आयु-उपयुक्त उपकरणों का उपयोग— ड्रैग एंड ड्रॉप गतिविधि, डिजिटल पेंट और ब्रुश का प्रयोग।	

पूर्व-प्राथमिक विद्यालय III (आयु 5–6 वर्ष)

टिप्पणी

1. मुख्य अवधारणाओं, प्रस्तावित शिक्षण प्रणाली की प्रक्रियाओं और सीखने के आरंभिक प्रतिफलों को एक-से-एक मिलाना अपेक्षित नहीं हैं। इन्हें समग्र रूप में देखा जाना चाहिए।
2. इन सीखने के प्रतिफलों का विकास इस मान्यता के साथ किया गया है कि पूर्व-प्राथमिक विद्यालय में प्रथम भाषा/निर्देश की भाषा घर में बोली जाने वाली भाषा या क्षेत्रीय भाषा का उपयोग द्वितीय भाषा के रूप में किया जाना चाहिए।

लक्ष्य 1— बच्चों का अच्छा स्वास्थ्य और खुशहाली बनाए रखना		
मुख्य अवधारणाएँ/कौशल	**शैक्षणिक प्रक्रियाएँ (शिक्षक क्या कर सकते हैं?)**	**सीखने के आरंभिक प्रतिफल**
• स्वयं और दूसरों के प्रति जागरूकता • स्वयं के प्रति सकारात्मक अवधारणा का विकास • आत्म नियमन • निर्णय लेना और समस्या समधान	**निम्नलिखित अवसर और अनुभव प्रदान किए जाएँ—** • बच्चों का अपने, अपने शरीर के अंगों, अपने परिवार के सदस्यों, पड़ोसियों और पूर्व-प्राथमिक विद्यालय के कर्मचारियों, गणमान्य व्यक्तियों तथा संबंधों के बारे में जानना। (दिन-प्रतिदिन की गतिविधियों, जैसे— सर्कल समय बच्चों को लेते-छोड़ते समय)।	• स्वयं और अन्य लोगों की शारीरिक विशेषताओं, जेंडर, रुचि, पसंद/नापसंद के आधार पर वर्णन करते हैं। • परिवार के अन्य सदस्यों, जैसे— चाचा, मामा, मौसी आदि से अपने संबंधों को समझने लगते हैं।

• सामाजिक रूप से वाँछनीय व्यवहार (प्रो-सोशल), जैसे— एक-दूसरे का ख्याल रखना, साझेदारी, सहयोग, दया और दूसरों की भावनाओं व अधिकारों का सम्मान करना। • अच्छी आदतों का विकास, साफ-सफाई एवं स्वयं की सुरक्षा के प्रति जागरूकता। • स्थूल गत्यात्मक कौशलों का विकास (चलना, दौड़ना, कूदना, उछलना, घुटनों के बल चलना, चढ़ना, कदमताल, फेंकना, लपकना, किक मारना) • सूक्ष्म गत्यात्मक कौशलों का विकास और आँखों-हाथों का समन्वयन (धागा पिरोना, कागज के छोटे-छोटे टुकड़े फाड़ना, चिपकाना, आड़ी-तिरछी रेखाएँ खींचना, चित्रकारी, रंग भरना, छपाई करना (ठप्पे लगाना), कागज मोड़कर वस्तुएँ बनाना (पेपर फोल्डिंग)।	• बच्चों का स्वयं के मूल्य और अपनी उपलब्धियों पर गर्व की अनुभूति करने के लिए सहयोग प्रदान करना। • बच्चों के जन्मदिवस, त्यौहारों का आयोजन करना, जैसे— उनके कार्यों का प्रदर्शन और सराहना। • एक-दूसरे के साथ मिल-जुल कर रहने के नियमों की समझ विकसित करना, जैसे— समूह में की जाने वाली गतिविधियाँ, भिन्न-भिन्न गतिविधि क्षेत्रों में खेलना और कहानी सुनाना आदि। बाहरी खेल खेलना और खेल के नियमों का पालन। • बच्चों में मनपसंद खेल, सामग्री और खेल क्षेत्र का चुनाव करना। • बच्चों में आपसी मन-मुटाव के समय दोनों पक्षों के लिए तदानुभूति एवं समझ दर्शाना, जैसे— खेल सामग्री साझा करना। • दूसरे बच्चों के साथ ताल-मेल, अंतःक्रिया के अवसर, जैसे— नाटकीय खेल, कठपुतली के खेल, नियम-आधारित खेल आदि। • सरल हाव-भाव एवं चिह्नों की पहचान कराना। • विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की प्रतिभागिता सुनिश्चित करने हेतू गतिविधियों का अनुकूलन करना। • अभिभावकों एवं समुदाय को शामिल करना। • स्वयं शौचालय का प्रयोग करना एवं हाथ धोना (बिना बड़ों की सहायता के)। • नियमित स्वास्थ्य जाँच (कद, वजन, और सामान्य स्वास्थ्य), टीकाकरण एवं बच्चों की सुरक्षा सुनिश्चित करना। • बातचीत, रोल-प्ले और कहानियों के माध्यम से खाने की स्वस्थ आदतों को विकसित करना। • सुरक्षा नियमों जिनका पालन बच्चे कर सकें उन पर चर्चा और प्रदर्शन करना। • अच्छे स्पर्श और बुरे स्पर्श के अंतर की समझ विकसित करना।	• गतिविधियों में स्वतंत्र रूप से भाग लेने लगते हैं। • खेल में नियमों का पालन करते हैं। • दिनचर्या में बदलाव को स्वीकार कर अनुकूलता दर्शाते हैं। • दैनिक गतिविधियों में निरंतर और लंबी अवधि तक ध्यान दे पाते हैं। • चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में भावनाओं पर नियंत्रण रखते हैं। • जिम्मेदारियाँ लेते हैं और अपनी प्राथमिकताओं एवं रुचियों के आधार पर चुनाव करते हैं। • समूह में कार्य करते या खेलते समय मतभेदों के सामधान सुझाते हैं और परस्पर सामंजस्य बिठाते हैं। • खेल और बातचीत के दौरान दूसरों के विचारों को सुनते और समझते हैं। • बड़े और छोटे समूह की गतिविधियों के दौरान जरूरतमंद साथियों की मदद करते हैं। • विविध पृष्ठभूमि से आए बच्चों एवं विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के प्रति स्वीकार्यता एवं संवेदनशीलता प्रदर्शित करते हैं। • स्वतंत्र रूप से बुनियादी स्वास्थ्य और स्वच्छता को कायम रखते हैं। • घर, पूर्व-प्राथमिक विद्यालय और खेल के मैदान में सुरक्षा संबंधित बुनियादी नियमों का पालन करते हैं। • अच्छे स्पर्श और बुरे स्पर्श के अंतर की समझ को दर्शाते हैं और परिचित व्यक्तियों से दूरी बनाए रखते हैं। • स्थूल माँसपेशी कौशलों में अधिक समन्वयन, नियंत्रण एवं ताकत प्रदर्शित करते हैं, जैसे— दौड़ने, कूदने, किक मारने, फेंकने और पकड़ने के कौशल।

	• नकल करने वाले खेल, जैसे— नेता की नकल करना, जानवरों की नकल करना आदि। • बच्चों को नाच, एक्शन गीत जिसमें सरल शारीरिक गतिविधियाँ शामिल हों, जैसे— घूमना, शरीर को लय ताल के अनुसार हिलाना-डुलाना, घुमाना आदि में संलग्न करना। • खेल जहाँ स्वतंत्र रूप से कोई भी आकार बनाते हैं, जैसे— संगीतमय खेल, गिनती के खेल, जैसे पहाड़ में आग लगी... भागो-भागो-भागो। जिसमें बच्चों को स्थान, बोध, दूरी एवं दिशा का ज्ञान हो। • एकल, जोड़े में, छोटे समूह एवं बड़े समूह की गतिविधियाँ जिनमें विभिन्न सतहों में स्थूल माँसपेशियाँ विकसित करने के कौशल शामिल हों। • अँगूठे एवं अँगुलियों से पेंसिल पकड़ने (पिंसर ग्रास्प) के कौशल का अभ्यास, जैसे— फाड़ना, काटना और चिपकाना, छीलना/स्टीकर चिपकाना, अँगुलियों से वस्तुएँ चुनना। • जोड़-तोड़ वाली वस्तुएँ जो छाँटने, मिलान करने, कल्पना करने का अनुभव प्रदान करती हों, उनके प्रयोग से प्रत्यक्ष अनुभव प्रदान करना।	• स्थान बोध की समझ प्रदर्शित करते हैं तथा संगीत एवं गत्यात्मक गतिविधियों में सक्रिय एवं रचनात्मक रूप से भाग लेते हैं। • सूक्ष्म, माँसपेशीय कौशलों का प्रर्दशन एवं उनका नियंत्रण सटीक रूप से करते हैं। • जटिल कार्यो को पूरा करने के लिए समन्वित गतिविधियों का प्रदर्शन करते हैं, जैसे— कागज को सीधी लाइन पर काटना, उड़ेलना, बटन बंद करना आदि। • चित्रकारी, रंगना और लिखते समय उपकरणों को पकड़ने और इस्तेमाल करने के लिए पिंसर ग्रास्प का प्रयोग करते हैं (हाथ के अँगूठे और अँगुली के बीच वस्तुओं को पकड़ने के लिए समन्वय बनाते हैं)।

लक्ष्य 2— बच्चों का प्रभावशाली संप्रेषक बनना		
मुख्य अवधारणाएँ/ कौशल	**शैक्षणिक प्रक्रियाएँ (शिक्षक क्या कर सकते हैं?)**	**सीखने के आरंभिक प्रतिफल**
बातचीत करना और सुनना • ध्यान देने की अवधि और सुनना • बातचीत के नियम/तौर-तरीके • रचनात्मक आत्म-अभिव्यक्ति और वार्तालाप • भाषा और सृजनात्मक चिंतन • शब्द भंडार/शब्द सामर्थ्य **आरंभिक पठन** • मुद्रित सामग्री की पहचान और अर्थ समझना दृश्य	**निम्नलिखित अवसर और अनुभव प्रदान किए जाएँ—** • मुक्त एवं निर्देशित वार्तालाप और बच्चों को विभिन्न संप्रेषण युक्तियों के प्रयोग के लिए मदद करना, जैसे— इशारे, हाव-भाव, अशाब्दिक अभिव्यक्ति, अपनी बारी आने पर बोलना और दूसरों को सुनना। • इस प्रकार के खेल खेलना जिनमें सरल प्रश्नों द्वारा हाल ही में घटित घटनाओं के बारे में बातचीत की जा सके।	• दूसरे व्यक्तियों को ध्यान से सुनते हैं और बातचीत के सामाजिक तरीकों को दर्शाते हैं, जैसे— दूसरों से नजरे मिलाकर बात करना और बोलने के लिए अपनी बारी का इंतजार करते हैं। • पूरे वाक्यों का इस्तेमाल कर अपनी जरूरतों और विचारों को अभिव्यक्त करते हैं। • जटिल निर्देशों का पालन करते हैं।

• दृश्य विभेदीकरण • पुस्तकों से लगाव • निर्देशों को समझ पाना • पठन का अभिनय • ध्वनियों की पहचान • श्रवण और लिखित सामग्री का ध्वनि के आधार पर संबंध • अक्षर बोध **आरंभिक लेखन** • विचारों और चित्रकला में संबंध चित्रकला के द्वारा आत्म-अभिव्यक्ति • उचित उपकरणों का प्रयोग • चिह्न लगाना • चित्रकला और लिखित सामग्री में विभेदीकरण • सोचने और बोलने का लिखित भाषा से संबंध **द्वितीय भाषा से परिचय**	• रचनात्मक सोच के साथ चित्र-पठन (समस्या-समाधान और पूर्वानुमानित प्रश्न सुलझाना, जैसे— तुम्हें क्या लगता है? चित्र में बच्चा आकाश की तरफ क्यों देख रहा है? छोटी लड़की गुब्बारे वाले से क्या कह रही है)। • लयबद्ध गाने गाना और शारीरिक समन्वयन बनाते हुए गतिविधि करना (जैसे— नाचना, कूदना आदि)। • बच्चों द्वारा कहानियों को अपने शब्दों में दोहराना, जैसे— घटनाओं, पात्रों के बारे में बातचीत। • नए शब्द एवं शब्दावली सीखना, जैसे— 'शब्द दीवार' 'मेरी पहली पुस्तक' बनाकर। • प्रतिदिन की गतिविधियों का फायदा उठाते हुए शब्द और ध्वनियों पर बात करना। • चिंतन एवं वाचन कौशल को उत्प्रेरित करने के लिए विवेचनात्मक प्रश्न पूछना, जैसे— यदि आपके पसंदीदा खिलौने को अलमारी के सबसे ऊपर रखा गया हो और आप उससे खेलना चाहते हैं तो आप क्या करेंगे? यदि आपके पंख होते और आप उड़ पाते तो आप कहाँ जाते? आपको क्या लगता है यह पुस्तक किस विषय पर होगी आदि। • छोटे समूहों में कहानी, कविता, पहेली गीतों को सुनना और स्वयं बनाना। • कक्षा में प्रिंट समृद्ध वातावरण में परस्पर बातचीत करना (वस्तुओं, शब्द-दीवार पोस्टरों को लेबल करके)। • आसपास के वातावरण में उपलब्ध मुद्रित/लिखित सामग्री का अवलोकन करना जो बच्चों को पढ़ने और दूसरों को पढ़कर सुनाने के लिए उत्प्रेरित करे (पर्यावरण में संकेत, साइन बोर्ड, खाद्य वस्तुओं के लेबल, बसों में पोस्टर, होर्डिंग्स आदि)। • बच्चों के साथ दैनिक घटनाओं का वर्णन करना और मुद्रित समृद्ध कक्षा उपलब्ध करवाना।	• बातचीत में हिस्सा लेते हैं और अपनी बारी का इंतजार करते हैं। अपनी पसंद-नापसंद, व्यक्तिगत अनुभवों को क्रम से, उचित कारणों की सहायता से, विस्तार से साझा करते हैं। • लंबी और ज्यादा संख्या में कविता, गीतों, कहानियों को समझने लगते हैं और सुना पाते हैं और लयबद्ध गतिविधियों में भाग लेते हैं। • जानकारी प्राप्त करते के लिए प्रश्न पूछते हैं और जानकारी देने के लिए प्रश्नों के उत्तर देते हैं। • शब्दावली में बढ़ोत्तरी और नए शब्द सीखने में रुचि दर्शाते हैं। • पढ़ी जा रही कहानी में बार-बार आने वाले शब्दों/चित्रों को पहचानकर उन्हें इंगित करने लगते हैं। • इस बात की समझ को दर्शाते हैं कि मुद्रित सामग्री में अर्थ निहित होता है। • कहानी को सही क्रम में दुबारा सुनाते हैं और जटिल सवालों के जवाब देते हैं। • चित्रों और शब्दों को देखकर किसी कहानी या जानकारी की पुस्तकों के विषय में पूर्वानुमान लगाते हैं। • शब्दों के साथ खेलते हैं और तुकबंदी करते हैं, जैसे— हैट-फैट-बैट या दिल्ली, बिल्ली, तिल्ली। • शब्दों की शुरुआती एवं अंतिम ध्वनि की पहचान करते हैं। • शब्दों में ध्वनियों की पहचान के आधार पर तालियाँ बजाते हैं। • कई अक्षरों और उनकी ध्वनियों को पहचानते हैं और शब्दों को डीकोड करने की कोशिश करते हैं। • स्वर एवं व्यंजन को मिलाकर अपने शब्द बनाते हैं।

	• पृष्ठों में शब्द पढ़ते समय शिक्षक शब्दों के। नीचे पूरे पृष्ठ पर अँगुली बाएँ से दाएँ और। ऊपर से नीचे कैसे घुमा रहे हैं, इसका अवलोकन करना। • बच्चों का पुस्तकों के विभिन्न प्रकार और स्वरूपों से परिचय कराना। • बच्चों का घर या अन्य स्थानों, जैसे— बाजार, अस्पताल, पूर्व-प्राथमिक विद्यालय, कार्यस्थल पर उपलब्ध मुद्रित/लिखित सामग्री को पढ़ना और इंगित करना। • पुस्तकों को इस्तेमाल करते हुए उसके भाग दिखाना, जैसे— मुख्य पृष्ठ, पीछे का कवर और बच्चों को चित्रों और प्रिंट को पहचानने में मदद करना। • दैनिक दिनचर्या का चित्रों, मुद्रित शब्दों द्वारा प्रदर्शन और उसके बारे में बातचीत। • कक्षा में मुद्रित/लिखित शब्दों को देखना। एवं पढ़ना। • बच्चों को अवधारणाओं और शब्दों के बीच संबंध बनाने में मदद करना, जैसे— शब्दों से चित्रों को जोड़ना। • दृश्यात्मक विभेदीकरण वाली गतिविधियाँ, जैसे— अक्षर/चित्र/आकार/शब्द में अंतर पता करना। • दृष्टि बोधात्मक गतिविधियाँ, जैसे— अंतर पता करने वाली गतिविधियाँ, मेज (भूल-भुलैया) छुपे शब्द, अक्षर, चित्र में परिचित शब्दों की खोज करना। • कक्षा में पढ़ने का क्षेत्र या छोटा-पुस्तकालय क्षेत्र बनाना जिसमें ज्ञानवर्धक पुस्तकें, वर्गीकृत कहानियाँ उपलब्ध हों। बच्चों को छोटे समूह में स्वयं पुस्तकें बनाने के लिए प्रोत्साहित करना। ये कहानी या ज्ञानवर्धक पुस्तकें हो सकती है।। • सस्वर पठन करना और आयु के स्तर अनुसार पुस्तकें उपलब्ध कराना जिनसे बच्चे लिखित सामग्री से परिचित हों, जैसे— पशुओं, वाहनों और पौधों आदि विषयों पर बातचीत करना।	• स्वतंत्र रूप से ध्वनि-अक्षरों को जोड़कर कई नए शब्द और स्वयं स्पेलिंग (इंवेंटेड स्पेलिंग) बनाते हैं। • लिखने और चित्रकला के उपकरणों, जैसे— पेंसिल, क्रेयॉन, ब्रुश आदि को बेहतर ढंग से पकड़ते एवं इस्तेमाल करते हैं। • अपना नाम सही ढंग से लिखते हैं। • प्रायः इस्तेमाल हो रहे अंग्रेजी के शब्दों का प्रयोग करते हैं— अभिवादन में, विनम्र अभिव्यक्ति में, जैसे— थैंक यू, प्लीज और घर की भाषा या अंग्रेजी में जवाब देते हैं। • दूसरी भाषा में कहे गए सरल वाक्य या छोटी कहानी की समझ दर्शाते हैं।

	• विभिन्न प्रकार की आयु-उपयुक्त कहानियाँ, जैसे— मौखिक, रंग मंच की सामग्री, चित्रों, नाटक, कठपुतलियों द्वारा। • पुस्तकों में शब्द चित्रों का उपयोग (लिखित शब्दों के स्थान पर चित्रों का उपयोग) जहाँ एक परिचित संज्ञा की जगह उसका चित्र बनाया गया हो, जैसे— "बस" शब्द की जगह 'बस' का चित्र बनाया गया हो। । • बच्चों के लिखने, पढ़ने और चित्रकारी। करने के लिए एक विशेष स्थान बनाना, जैसे— 'साक्षरता क्षेत्र' (किताबों एवं। अन्य पठन सामग्री को आसानी से। उपलब्ध कराना)। • प्रसंग के अनुसार सरल पहेलियाँ बनाना और उन्हें हल करना (4–5 लाइनें)। • ध्वनि खंडों के प्रति जागरूक होना (शब्द, शब्दांश, तुकात्मक शब्द), जैसे— शुरुआती एवं अंत ध्वनियों के साथ ध्वन्यात्मक खेल। • बच्चों से किताबों में तुकात्मक शब्दों को स्वतः इंगित करवाना।। • धुन का पालन करना, बच्चों को शब्दांशों को सुनकर उसके अनुसार ताली बजाने में सहायता करना, जैसे— यदि शिक्षक ने 'हाथी' शब्द का चयन किया तो दो बार ताली बजेगी 'हा' और 'थी'। • तुकात्मक शब्दों की लड़ी बनाना, जैसे— रेन, चेन, ड्रेन, ट्रेन, ग्रेन, पेन आदि। • अक्षरों की पहचान और उनके साथ उनकी ध्वनियों का मिलान। • बच्चों को वर्गीकृत कहानी की पुस्तकें उपलब्ध कराकर, 'रीडिंग अलाउड' द्वारा लिखित भाषा, विभिन्न विषय वस्तुओं पर वार्तालाप, जिनमें बातचीत के कई बिंदु हों, जैसे— जानवर, यातायात, पेड़-पौधे आदि। • स्वयं के मनपसंद अक्षरों/शब्दों की किताब बनाना • अक्षर-चित्र/वस्तु डोमिनो के साथ खेल		

	• अंग्रेजी के "अपर केस" और "लोवर केस" की पहचान और मिलान (कट-आउट्स के द्वारा, चुंबकीय अक्षर, विभिन्न सतहों वाले अक्षर, जैसे— मुलायम, खुरदुरे)। • लेखन एवं चित्रकला के शुरुआती प्रयासों द्वारा अपनी भावनाएँ, अनुभवों और विचारों को व्यक्त करना। • जिन बच्चों में गत्यात्मक चुनौतियाँ हों, उन बच्चों को पकड़ी जा सकने वाली पज़ल्स देना (जिसमें वे अक्षरों को कट-आऊट हैंडल की सहायता से लगा सकें)। • बच्चों को यह दर्शाना कि किसी पृष्ठ को पढ़ते समय अँगुली रखकर कैसे पढ़ा जाता है। आँखों को अँगुली के साथ कैसे घुमाया जाता है (कहानी सुनाने के समय/चार्ट पर लिखी कविता पढ़ते समय या 'साइट शब्द' की ओर देखते हुए)। • वातावरण में उपलब्ध लेखन/प्रिंट (कक्षा, घर या रोड) का अवलोकन और नकल करना। • बहुत-सी मुद्रित सामग्री के साथ अंतःक्रिया करना जो यदि बच्चे चाहे तो नकल करें। • विभिन्न प्रकार के कागजों में लाइनों, चित्रकारी द्वारा लेखन के शुरुआती प्रयास। • मोटी पेंसिल, मिट्टी, आटे, प्लासटीसीन द्वारा अक्षरों को लिखना। • कक्षा में उपलब्ध चार्ट में रोज अपनी उपस्थिति दर्ज करना। • विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के समावेश के लिए अनुकूलन। • बोलचाल में प्रयुक्त हो रहे सरल अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग (सर्कल टाइम, छोटे समूह की गतिविधियाँ), बड़ों से बातचीत करते समय। • नाम कार्ड का इस्तेमाल • अंग्रेजी की कविताएँ, गाने सुनना • ऑडिया-वीडियो के माध्यम से आयु-उपयुक्त	

लक्ष्य 3— बच्चे द्वारा सीखने के प्रति उत्साह प्रदर्शित करना और अपने आसपास के परिवेश से जुड़ना		
मुख्य अवधारणाएँ/कौशल	**शैक्षणिक प्रक्रियाएँ (शिक्षक क्या कर सकते हैं?)**	**सीखने के आरंभिक प्रतिफल**
संवेदी विकास • देखना • सुनना • छूना • सूँघना • चखना **संज्ञात्मक कौशल** • अवलोकन • पहचान करना • स्मृति/याद करना • मिलान करना • वर्गीकरण करना • नमूने बनाना • क्रम के अनुसार सोचना • सृजनात्मक चिंतन • समीक्षात्मक चिंतन • समस्या समाधान • तर्क प्रस्तुत करना • जिज्ञासा • प्रयोग करना • जिज्ञासा • प्रयोग करना • खोजबीन करना **अवधारणाओं का निर्माण** • रंग, आकृति, दूरी, नाप, आकार, लंबाई, भार, ऊँचाई, समय • स्थान-बोध • एक-से-एक की संगतता	**निम्नलिखित अवसर और अनुभव प्रदान किए जाएँ—** • चखने, सूँघने, देखने, सुनने व छूने जैसी संवेदनाओं के विकास हेतु गतिविधियाँ, उदाहरण के लिए, चखकर अनुमान लगाना कि क्या खाया, फल/सब्जियों का स्वाद पहचानना और उनके नाम बताना, बोतलें सूँघना, खुशबुदार आटे से सृजन करना, उन वस्तुओं के साथ प्रयोग करना जिसमें खुशबू आती हो, नाम/अक्षर ढूँढना, खोज करने वाले खेल, आँख पर पट्टी बाँधकर खेलना, आवाज करने वाले ध्वनि डिब्बों को जोर से धीरे के क्रम में लगाना, बाहर की आवाजें ढूँढना, विभिन्न सतहों वाले अक्षर ढूँढना आदि। • संवेदनाओं का प्रयोग करके देखना उदाहरण के लिए, बच्चों को पर्यावरण में उपलब्ध ध्वनियाँ सुनने के लिए प्रोत्साहित करना, जैसे— सूखे पत्तों पर चलते समय, हवा चलने पर आदि। खाना बनाते समय खुशबू सूँघना, कड़वे और मीठे का स्वाद, सुनना और वाद्य यंत्रों को बजाना, संवेदनाओं के साथ प्रयोग, भ्रमण करना और संवेदनाओं पर आधारित कहानियाँ सुनना, विभिन्न रंगों की बोतल के ढक्कन/कपड़े के टुकड़ों के साथ खेलना आदि। • पहेलियाँ बूझना (संवेदनाओं) पर आधारित, जैसे— मेरी त्वचा मुलायम और रोएँदार है, मैं म्याँऊ करती हूँ बताओ मैं कौन हूँ?(बिल्ली) • सुबह के सर्कल टाइम में चर्चा करने वाले प्रश्न, जैसे— जब आप सुबह उठते हैं, पहली कौन-सी चीज आप देखते हैं/सुनते हैं/छूते हैं/सूँघते हैं/चखते हैं? आपके शरीर का कौन-सा अंग आपको देखने/सुनने/सूँघने/स्वाद लेने और महसूस करने में मदद करता है।	• परिवेश का अवलोकन और खोजबीन करने के लिए पाँचों इंद्रियों का प्रयोग करते हैं। • अपने परिवेश में मौजूद वस्तुओं (ध्वनियों, लोगों, चित्रों, जानवरों, पक्षियों आदि) पर ध्यान देते हैं और उनका वर्णन करते हैं। • एक साथ देखी गई 4–5 वस्तुओं को याद रखते हैं और पुनः बताते हैं। • किसी भी परिचित वस्तु के चित्र को देखकर 3–5 गायब भागों को पहचान/बता पाते हैं। • वस्तुओं के समूह को दो या दो से अधिक श्रेणियों के आधार पर वर्गीकृत करते हैं। • नए आकार (पैटर्न) बनाते हैं। • 4–5 चित्र कार्ड या वस्तुओं को क्रम से लगाते हैं। • कहानी या घटनाओं को क्रम से बताते हैं। • सरल समस्याओं के सुलझाने के तरीके कारण सहित बताते हैं। • संबंधों को समझने लगते हैं, जैसे— पूरी वस्तु या उसका कोई भाग, दूसरों से भिन्न ढूँढना, संबंध बताना आदि। • कारण बताते हैं, अनुमान लगाते हैं, निष्कर्ष निकालकर व्याख्या करते हैं। • अपने परिवेश की जाँच करते है, वस्तुओं को तोड़ते-मरोड़ते हैं, प्रश्न पूछते हैं, खोज करते हैं, अपने विचार बनाते हैं और पूर्वानुमान लगाते हैं। • वस्तुओं में समानता देख सकते हैं और वस्तुओं को आकार, रंग तथा बड़े-छोटे के आधार पर वर्गीकृत कर सकते हैं।

संख्या बोध • गिनना और बताना कि कितने हैं। • संख्याओं की पहचान • क्रम का बोध (10 तक किसी भी दी गई संख्या से आगे गिनती कर पाना) **परिवेश से संबंधित अवधारणाएँ** • प्राकृतिक— पशु, फल, सब्जियाँ, खाद्य पदार्थ, जीव-जंतु • भौतिक— जल, वायु, मौसम, सूर्य, चंद्रमा, दिन और रात) • सामाजिक— मैं, परिवार, यातायात, त्यौहार, हमारे सहयोगी, समुदाय **तकनीक का प्रयोग**	• विभिन्न विषयों के पोस्टरों द्वारा चित्र पठन करना और बच्चों को चित्रों को देखकर बारीक अंतरों को पहचानने के लिए प्रोत्साहित करना, जैसे— कितने जानवर/चिड़िया हैं। • कौन-सा एक भिन्न है, जैसे— 3 से अधिक घटकों के आधार पर वस्तुओं की तुलना और वर्गीकरण करते हैं, जैसे— आकार, रंग और बनावट। • भ्रमण के दौरान अपने आसपास के परिवेश में तरह-तरह की वस्तुएँ देखना, जैसे— वस्तु/खिलौना कहाँ था? वह दूसरे किसी वस्तु की तुलना में कहाँ रखा था?। • तोड़-मरोड़कर फिर जोड़ देने वाली खेल सामग्री, जैसे— ब्लॉक्स, खिलौने, नट और बोल्ट आदि। • खोजने से संबंधित खेल क्रियाएँ, जैसे— रेत की ट्रे में अक्षर ढूँढना/नंबर ढूँढना आदि। • ठोस वस्तुओं में मिलान करना एवं छाँटना, बिंदुओं को संख्या से मिलाना, पैटर्न बनाना, टॉफी, बिस्कुट के रैपर का मिलान, जो शब्द बार-बार कहानी में आते हैं, उन्हें अपने परिवेश में सुनना/देखना आदि। • सोचने पर मजबूर करने वाली गतिविधियाँ कराएँ, जैसे— वर्गीकरण करना (दो या तीन बिंदुओं के आधार पर), रंग-बिरंगे बटनों को रंगों के आधार पर वर्गीकृत करना एवं फिर अँगुली लगाकर गिनना, कपड़ों के टुकड़ों को रंगों तथा डिजाइन के हिसाब से वर्गीकृत करना, जैसे— कुछ फल छीलकर खाए जाते हैं व कुछ बिना छीले। • वातावरण में उपलब्ध सामग्री का प्रयोग करके अपने आप नए पैटर्न बनाना और आगे बढ़ाना, जैसे— लकड़ी, फूल, पत्ती, वस्तुएँ/ब्लॉक आदि। • लय को समझकर उसका अनुकरण करना, जैसे— ताली-ताली, चुटकी-चुटकी और अपनी लय बनाना।	• पाँच वस्तुओं को किसी एक विशेषता के आधार पर क्रम से लगाते हैं। • माँगने पर 10 तक वस्तुएँ गिनकर देते हैं। • 10 तक की संख्या और अंकों की पहचान करते हैं और उन्हें लिखते हैं। • अपने आसपास के शारीरिक, सामाजिक और प्राकृतिक वातावरण के बारे में जिज्ञासा दिखाते हैं, प्रश्न पूछते हैं तथा संबंधित अवधारणाएँ विकसित करते हैं। • पर्यावरण के प्रति जागरूकता और संवेदना व्यक्त करते हैं, जैसे— पानी बर्बाद नहीं करना, पौधों को पानी देना, जब जरूरत न हो लाइट बंद करना आदि। • प्रौद्योगिकी के प्रयोग के प्रति जागरूकता और रुचि दिखाते हैं।

	• जेब वाले अक्षर या संख्या चार्ट में अक्षरों या संख्याओं को डालना और पढ़ना। • सुनना और सुनी हुई कहानी को क्रम से दोहराना और 5–6 कहानी कार्ड्स को क्रम से लगाना (बाएँ से दाएँ), शब्दरहित चित्रात्मक किताबों को देखकर शब्द बताना, दिनचर्या पर चर्चा करना (वह पहले क्या करते हैं, फिर क्या करते हैं)। • समस्याओं को प्रस्तुत करना और उसके समाधान पूछना, जैसे— आप अगर कमरे में बंद हो जाएँ? अगर बारिश होगी आप स्कूल कैसे जाएँगे? • 6–7 टुकड़ों वाली पजल पूरी करना, मेज (भूल-भुलैया) सुलझाना, अधूरे चित्र को पूरा करना और चित्र के अधूरे भाग को खोजना आदि। • संबंध के आधार पर जोड़े बनाना, जैसे— कप-प्लेट। • चिंतन कौशलों को उत्प्रेरित करना, जैसे— कारण और प्रभाव संबंध, विवेचनात्मक उत्तर वाले प्रश्न, अनुमान और आकलन लगाना, जैसे— फिर क्या होगा, क्या हुआ होगा या क्या हुआ होगा होता, अगर कछुआ-खरगोश के संग दौड़ लगाते समय सो जाता है आदि। • बच्चे 'क्यों?' वाले प्रश्न पूछें और खोज करके उत्तर ढूँढें, जैसे— शिक्षक के साथ सरल प्रयोग करें, कागज की नाव बनाना और पानी में तैराना, कागज के हवाई जहाज बनाना और फिर हवा में उड़ाना, गुब्बारे फुलाते समय हवा को महसूस करना आदि। • आरंभिक वैज्ञानिक प्रयोगों में शिक्षक की सहायता से सक्रिय रूप से भाग लेना (जैसे— खिलौनों को पानी में तैराना, पौधों को बड़े होते देखना और उनके बारे में बातचीत करना; अवलोकन करना कि पानी कैसे रूप बदलता है जैसे बर्फ से पानी तथा पानी से भांप बनती है आदि); संवेदनाओं का विकास और जानकारी प्राप्त करना, विभिन्न सामग्री देखना, कारण जानना, सरल से मापक उपकरण, जैसे— कप।	

- गिलास, जार और अमानक वस्तुओं (जैसे— मुट्ठीभर बीज/टॉफी, एक कप पानी/दूध, चुटकीभर नमक आदि) का उपयोग करते हुए वस्तुओं का मापन करना।
- रंगों, आकारों के साथ प्रयोग, उदाहरण के लिए, रंग मिलाना और नए रंग ढूँढना/बनाना, रंगों को गाढ़े से हलके के क्रम का मापन करना।
- बच्चों के चित्रों के आधार पर संबंधसूचक शब्दों का प्रयोग, जैसे— ऊपर-नीचे, दायाँ-बायाँ, अंदर-बाहर आदि।
- यह बताना कि एक दिन पहले क्या हुआ था या उन्होंने अपने क्षेत्र भ्रमण के बाद क्या किया आदि।
- चार्ट, वस्तुओं और किताबों द्वारा तुलना करने के प्रत्यक्ष अनुभव आदि।
- स्थान बोध कराने हेतु गतिविधियाँ, जैसे— कुर्सी के सामने, पीछे, बगल में, ऊपर, नीचे, लय-ताल वाली गतिविधियाँ, यह आकलन करना कि नाचने या कोई काम करने के लिए कितनी जगह चाहिए होगी, कुछ रोचक कार्य-पत्रों का उपयोग, स्थान-बोध संबंधी भाषा (जैसे— सीधे/मुड़ना/सिकुड़ना या छोटे बीज बन जाने का अभिनय आदि)।
- क्रम से लगाने वाली गतिविधियाँ, जैसे— वस्तुओं या उनके चित्रों को बड़े से छोटे/भारी से हल्के के क्रम में लगाना।
- अपने परिवेश में वस्तुओं को अर्थपूर्ण तरीके से गिनना।
- अपने परिवेश में संख्या/चिह्नों को देखना, नंबर ढूँढना, गिनना आदि।
- दैनिक जीवन में संख्याओं और गिनती का प्रयोग करते हैं और यह समझते हैं कि संख्या परिमाण को दर्शाती हैं।
- एक संख्या के साथ एक वस्तु को मिलाना, जैसे— एक पत्थर पर एक पत्ता लगाना, एक गिलास में एक स्ट्रा डालना आदि।

	• किसी समारोह, जन्मदिन या त्यौहार के लिए बचे हुए दिन गिनना (जैसे— लकड़ी/पत्थर/चित्र वाला कैलेंडर आदि)। • खेल क्रियाओं द्वारा ये आभास कराना कि बच्चों को अपने आस-पड़ोस के बगीचे/पेड़-पौधे का ख्याल रखना चाहिए और उनकी सुंदरता बनाए रखनी चाहिए आदि। • आसपास के पार्क, बगीचे, बाजार, आस-पड़ोस में ले जाना जहाँ बच्चों को देखने, बातचीत करने के अवसर मिलें, जैसे— जानवर, चिड़िया, पेड़-पौधे, हमारे सहयोगी आदि। • जानवरों के प्रति संवेदना विकसित करना, जैसे— जानवरों को खाना खिलाना, चिड़ियों को खाना खिलाना, उन्हें नुकसान नहीं पहुँचाना, उनके साथ खेलना आदि। • बीती घटनाओं और आगे की योजनाओं पर बातचीत करना, जैसे— कल क्या किया, कल क्या करेंगे, अभी क्या करना चाहोगे इत्यादि। • परिवार के सदस्यों के साथ परिवार, समुदाय के विषय में बातचीत, जैसे— दादा-दादी, नाना-नानी आदि के बारे में जानना, बचपन के अनुभवों को साझा करना आदि। • तकनीकी के प्रयोग से बच्चों को कविता, कहानी, सुनाना। • बच्चों को कंप्यूटर में (ड्रेग एंड ड्रॉप) वाली गतिविधियाँ कराना। • तकनीक के प्रयोग द्वारा बच्चों को चिड़ियाघर में जानवरों, रेलवे स्टेशन, मेले आदि के चलचित्र दिखाना। • आयु के अनुरूप एप और अन्य डिजिटल सामग्री का प्रयोग करना।	